कोलकाता केंद्र की गतिविधियां 2013

16 जनवरी 2013 स्थान-कोलकाता केंद्र का सभा कक्ष

अनुवाद पुनर्जन्म है रचना काः केदारनाथ सिंह

कोलकाता, 16 जनवरी। हिंदी के विशिष्ट कवि केदारनाथ सिंह ने कहा है कि जीवन से लय खत्म हो रही है। कविता में भी संगीतात्मकता कम होती जा रही है। डा. सिंह आज महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र द्वारा आयोजित बांग्ला कविता संवाद कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि बहुत कम कवि हैं जिनकी कविताओं में लय है। बांग्ला में यह विशेषता जीवनानंद दास, सुभाष मुखोपाध्याय, सुनील गंगोपाध्याय, नीरेंद्रनाथ चक्रवर्ती, शंख घोष, शक्ति चट्टोपाध्याय, नवनीता देवसेन, नवारुण भट्टाचार्य, जय गोस्वामी और अभीक मजुमदार की कविताओं में हम देख सकते हैं। उन्होंने कहा कि इन कवियों की चुनिंदा रचनाओं का हिंदी में अनुवाद हुआ है। डा. सिंह ने कहा कि अनुवाद रचना का पुनर्जन्म होता है। उन्होंने कहा कि कविता वह है जिसे सुनकर मन में सन्नाटा हो जाए। इसे भी ध्यान रखा जाना चाहिए कि कविता का असर धीरे-धीरे होता है। छोटी नदी के प्रवाह की तरह।

नेपाली के प्रसिद्ध कवि तथा भारत में नेपाल के महावाणिज्य दूत चंद्र कुमार घिमेरे ने कहा कि समकालीन बांग्ला कविताओं में जीवन का संगीत है। कविता में सौंदर्य व भाव बोध का संतुलन होना चाहिए और यह विशेषता आज की बांग्ला कविता में हम पाते हैं। घिमिरे ने कहा कि आज की बांग्ला कविता में बडे ही सहज ढंग से भावों की अभिव्यक्ति हुई है जिसमें देश, समाज, जीवन के उतार-चढ़ाव का यथोचित समावेश है। कविता में जीवन के किरदारों को जीवंत बनाना अत्यंत कठिन होता है, आज के बांग्ला कवियों ने बड़ी आसानी से इसे दिखाया है। घिमिरे ने अभीक मजुमदार की तीन कविताओं तृतीय विश्वेर गल्पो, इच्छापत्र और परिवर्तन को उदाहरण के रूप में रखा। कवि-गायक मृत्युंजय कुमार सिंह ने कहा कि प्रकृति प्रेमी हुए बिना कवि नहीं बना जा सकता और आज के बांग्ला कवियों के प्रकृति प्रेमी होने का सहज ही पता चलता है।

कार्यक्रम में बाएं से अभीक मजुमदार, नवारुण भट्टाचार्य, डा. केदारनाथ सिंह और डा. कृपाशंकर चौबे।

बांग्ला के प्रसिद्ध कवि नवारुण भट्टाचार्य ने कहा कि बांग्ला कविता की समृद्ध परंपरा है और भारतीय भाषाओं में उसके स्रोत हम खोज सकते हैं। उन्होंने कहा कि किसी भी भाषा की कविता को भाषा बंधन से मुक्त होना चाहिए। बांग्ला के युवा कवि कवि अभीक मजुमदार ने कहा कि कविता जीवन और प्रकृति से कटकर हो ही नहीं सकती। उन्होंने कहा कि 1971 के नक्सल प्रभावित दौर और प्रशासन की निष्ठुरता ने बांग्ला के अनेक कवियों को रूपांतरित किया। कार्यक्रम का संचालन बांग्ला के युवा कवि प्रसून भौमिक ने किया। स्वागत भाषण डा. कृपाशंकर चौबे ने तथा धन्यवाद ज्ञापन राजेंद्र राय ने किया।

24 फरवरी 2013 स्थान-कोलकाता केंद्र का सभा कक्ष

सूचना के युग में मानचित्रण का महत्व बढ़ाः डा पृथ्वीश नाग

कोलकाता, 24 फरवरी। देश के सुप्रसिद्ध भूगोलविद और महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के कुलपति डा. पृथ्वीश नाग ने कहा है कि सूचना तकनीक के युग में मानचित्रण का महत्व बहुत बढ़ गया है। डा. नाग आज महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र में मानचित्रण का इतिहास विषय पर व्याख्यान दे रहे थे।

उन्होंने कहा कि मोबाइल जैसे उत्तर आधुनिक संचार उपकरणों में मानचित्रण के माध्यम से दैनिक उपयोग की सारी सूचनाएं जल्द ही सर्वसुलभ होने लगेंगी। मसलन जिस इलाके का मानचित्र प्रेक्षक देखेगा, उसे उस अंचल की सभी सूचनाएं यथा अस्पताल, स्कूल, पुलिस थाने एवं रास्तों की जानकारी मिल जाएगी। यहां तक कि उसे रेस्टोरेंट के मेनू, अस्पताल में चिकित्सकों की उपलब्धता की सूचना भी मिल जाएगी। उन्होंने कहा कि मानचित्रण अक्षांस देशांतर के हिसाब से चलता है। हर मानचित्र का अपना उद्देश्य होता है। उन्होंने कहा कि आज डिजिचल मानचित्र तकनीकी दृष्टि से बहुत समृद्ध हैं किंतु प्राचीन काल के मानचित्र कलात्मक हुआ करते थे।

डा. नाग ने सैकड़ों वर्षों के मानचित्रण के इतिहास को पावर प्वाइंट के माध्यम से प्रस्तुत करते हुए दिखाया कि मध्यकाल के मानचित्रों का रुझान वाणिज्यिक यात्राओं की सूचनाओं के आधार पर तैयार किया जाता था जो परवर्ती काल में सूचनाओं की उपलब्धता के कारण आधुनिक मानचित्र की शक्ल लेने लगा। उन्होंने कहा कि मध्यकालिक मानचित्रों में कई कमियां रह जाती थीं किंतु आधुनिक लेजर तकनीक के कारण आज किसी भी स्थान का वास्तविक मानचित्र उपलब्ध होने लगा है जो आभासी त्रिआयामी ऊंचाई-निचाई और यहां तक कि उर्ध्वाधर एवं क्षैतिज अवैध निर्माण को भी चिन्हित करता है। डा. नाग ने बताया कि अली बंधुओं एवं अंग्रेजों के बीच मैसूर की लड़ाई में सबसे पहले विश्व में राकेट के प्रक्षेपण की घटना हुई थी। उसी का विकसित रूप आज के प्रक्षेपास्त्रों में देखा जा सकता है। उन्होंने बताया कि हैदर बंधुओं के राकेट प्रक्षेपण की तस्वीर नासा की चित्र दीर्घा में लगी हुई है। व्याख्यान के बाद डा. नाग से संवाद कार्यक्रम हुआ। साहित्य के अध्येता शिवप्रिय

महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र में व्याख्यान देते डा. पृथ्वीश नाग।

के प्रश्न के उत्तर में डा. नाग ने कहा कि कंप्यूटर की गणनाओं पर आधारित आज की आक्रात्मक सूचनाओं और प्राचीन काल के भारतीय मनीषियों द्वारा ईजाद की गई गणना पद्धतियों में अद्भुत समानता देखी जा सकती है। वरिष्ठ साहित्यकार डा. प्रमथनाथ मिश्र के सवाल के जवाब में डा. नाग ने कहा कि भारत के किसी भी प्रामाणिक मानचित्र के लिए सर्वे आफ इंडिया के जारी किए गए मानचित्र प्रयोग में लाए जाने चाहिए। काचरापाड़ा कालेज की हिंदी विभागाध्यक्ष सुनीता मंडल के सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि मानचित्रण के दुरुपयोग की आशंका से इंकार नहीं किया जा सकता। इस अवसर पर विश्वभारती विश्वविद्यालय, शांतिनिकेतन में भूगोल के एसोसिएट प्रोफेसर डा. गोपाल चंद्र देवनाथ ने मानक मानचित्र बनाए जाने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने बताया कि बोलपुर का मानक मानचित्र बनाया जा

रहा है। कार्यक्रम का संचालन जेके भारती ने और स्वागत भाषण तथा धन्यवाद ज्ञापन विवि के एसोसिएट प्रोफेसर तथा कोलकाता केंद्र के प्रभारी डा. कृपाशंकर चौबे ने किया। इस कार्यक्रम में बंगाल के विभिन्न विश्वविद्यालयों के विद्यार्थी तथा शोधार्थी उपस्थित थे। इस विशेष व्याख्यान कार्यक्रम की अध्यक्षता सन्मार्ग के संपादक हरिराम पांडेय ने की।

25 फरवरी 2013 स्थान-कोलकाता केंद्र का सभा कक्ष

सार्क देशों की भाषाओं का अध्ययन केंद्र बनेगा विविः कुलपति

कोलकाता, 25 फरवरी। महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति विभूति नारायण राय ने कहा है कि भारत सदियों से ज्ञान के क्षेत्र में विश्व का नेतृत्व करता रहा है। इस कड़ी में आनेवाले समय में उनका विश्वविद्यालय चरणबद्ध ढंग से विश्व की समस्त भाषाओं में समन्वय कायम करने की दिशा में क्रियाशील हो चुका है। श्री राय विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र में अन्य भारतीय भाषाओं में हिंदी की व्याप्ति पर आयोजित संगोष्ठी में अध्यक्षीय वक्तव्य दे रहे थे। उन्होंने कहा कि उनका विश्वविद्यालय हिंदी को विश्वभाषा बनाने का गंभीर प्रयास कर रहा है। श्री राय ने कहा कि विश्व के शताधिक विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाती है और वहां के हिंदी पाठ्यक्रम के निर्माण का दायित्व जोहानिसबर्ग में हाल में संपन्न विश्व हिंदी सम्मेलन में उनके विश्वविद्यालय को मिला और इसी बीच विदेशों में हिंदी पढ़ानेवाले शिक्षकों के सहयोग से एक मानक पाठ्यक्रम का निर्माण कर लिया गया है। यह पाठ्यक्रम हिंदी पढ़नेवाले विदेशी छात्रों के लिए एक उच्च मानक संपन्न व्यावहारिक पाठ्यक्रम होगा। श्री राय ने कहा कि विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र ने बांग्ला, नेपाली और तमिल जैसी विश्व भाषाओं के साथ हिंदी का संबंध प्रगाढ़ करने तथा उनसे साहित्यिक संबंध जोड़ने की दिशा में पहल शुरू कर दी है। सार्क देशों की भाषाओं के क्लासिक साहित्य का अनुवाद व साहित्यिक अध्ययन विवि के कोलकाता केंद्र की सर्वोच्च प्राथमिकता में शामिल है। इस संदर्भ में श्री राय ने विवि के एसोसिएट प्रोफेसर तथा कोलकाता केंद्र के प्रभारी डा. कृपाशंकर चौबे की भूमिका की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

संगोष्ठी को संबोधित करते हुए नेपाली कवि तथा कोलकाता में नेपाल के महावाणिज्य दूत चंद्र घिमिरे ने कहा कि नेपाल में हिंदी साहित्य का हर युग में प्रभाव रहा है। खुद उनकी पीढ़ी हिंदी के अनेक लेखकों को पढ़ते हुए बड़ी हुई। हिंदी व नेपाली भाषा के अंतर्संबंधों को अलगाकर देखना अत्यंत कठिन कार्य है। उड़िया की कई कृतियां हिंदी में तथा हिंदी की कृतियां उड़िया में अनुवाद करनेवाले हिंदी के सुपरिचित साहित्य समालोचक प्रोफेसर अरुण होता ने हिंदी और उड़िया के अंतर्संबंधों को व्याख्यायित करते हुए दोनों भाषाओं को नाभिनालबद्ध बताया। इस अवसर पर हाल में मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी द्वारा रामचंद्र शुक्ल राष्ट्रीय आलोचना पुरस्कार प्राप्त डा. अरुण होता का हिंदी विवि की तरफ से सम्मान किया गया। कुलपति विभूति नारायण राय ने प्रो. अरुण होता का अंगवस्त्रम प्रदान कर सम्मान किया। संगोष्ठी को संबोधित करते हुए युवा

संगोष्ठी में बाएं से डा. कृपाशंकर चौबे, राकेश मिश्र, कुलपति विभूति नारायण राय, नेपाल के महावाणिज्य दूत चंद्र घिमिरे तथा प्रो. अरुण होता।

साहित्यकार जे.के भारती ने कहा कि असमिया तथा हिंदी में अनेक समानताएं हैं एवं संस्कृत का व्यापक प्रभाव असमिया पर देखा जा सकता है। स्वागत भाषण विवि के असिस्टेंट प्रोफेसर तथा सुपरिचित युवा कथाकार राकेश मिश्र ने, संचालन विवि के एसोसिएट प्रोफेसर तथा कोलकाता

केंद्र के प्रभारी डा. कृपाशंकर चौबे ने तथा धन्यवाद ज्ञापन विवि के नेहरू अध्ययन केंद्र के रिसर्च एसोसिएट शिवप्रिय ने किया।

07 मार्च 2013 स्थान-कोलकाता केंद्र का सभा कक्ष

भाषाई संकट से जूझ रही है हिंदी पत्रकारिताः विकास मिश्र

कोलकाता, 08 मार्च। वरिष्ठ पत्रकार तथा लोकमत समाचार के संपादक विकास मिश्र ने कहा है कि हिंदी पत्रकारिता आज भाषाई संकट से जूझ रही है। श्री मिश्र महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र में पत्रकारिता का बदलता दौर विषय पर आयोजित संगोष्ठी को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि आज हिंदी पत्रकारिता में अंग्रेजी शब्दों के बहुतायत प्रयोग के कारण कई बार वह हिंग्लिश की पत्रकारिता प्रतीत होती है। यदि इस प्रवृत्ति को नहीं रोका गया तो इसके सांघातिक परिणाम होंगे।

श्री मिश्र ने कहा कि भाषाई संकट के बावजूद पत्रकारिता में मिशन का भाव पूरी तरह लुप्त नहीं हुआ है। आज भी कई पत्रकार हैं जिन्होंने पेशे पर आंच नहीं आने दी। वे न बिके न अपनी पत्रकारिता को बिकाऊ माल का प्रवक्ता होने दिया। उन्होंने कहा कि नकारात्मक प्रवृत्ति को प्रकाशित-प्रसारित करने से मीडिया को बचना होगा। महाराष्ट्र में आज कोई दल यदि बिहारियों के प्रति विद्वेष रखता है तो उसे यदि कवर करना बंद कर दिया जाए तो वह प्रवृत्ति खुद-ब-खुद कम होती जाएगी। संगोष्ठी को प्रो. सुभाष मंडल, प्रो. जेके भारती, प्रो. प्रतीक सिंह, कृष्णानंद भारती और मनीषा यादव ने भी संबोधित किया।

संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए समाजवादी चिंतक राजेंद्र राय ने कहा कि यदि पत्रकारों ने अपनी कलम बेच दी तो देश के रहनुमा देश को बेच देंगे। संगोष्ठी के दूसरे सत्र में विकास मिश्र से संवाद का कार्यक्रम रखा गया। समापन वक्तव्य देते हुए महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी की विश्वविद्यालय के एसोसिएट प्रोफेसर तथा कोलकाता केंद्र के प्रभारी डा. कृपाशंकर चौबे ने कहा

कि पत्रकारिता में घर कर गईं विकृतियों की पहचान यदि हो रही है तो यही आश्वासन भी है कि

विकास मिश्र को रवींद्र साहित्य भेंट करते जेके भारती, राजेंद्र राय और डा. कृपाशंकर चौबे।

उसे दूर भी किया जा सकता है।

कुलसचिव डा. कैलाश खामरे का कोलकाता केंद्र का दौरा

कोलकाता, 08 मार्च। महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलसचिव डा. कैलाश खामरे ने आज विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र का दौरा किया। उन्होंने कोलकाता केंद्र के प्रभारी डा. कृपाशंकर चौबे के साथ बैठक की। कुलसचिव ने कोलकाता केंद्र की गतिविधियों पर संतोष जताते हुए इसका सारा श्रेय केंद्र प्रभारी को दिया।

इस अवसर पर कोलकाता के बुद्धिजीवियों के साथ भी कुलसचिव ने एक बैठक की। बैठक में प्रो. अरुण होता, समाजवादी चिंतक राजेंद्र राय, गीतेश शर्मा, रवि प्रकाश, प्रो. जेके भारती, प्रो. सुभाष मंडल, प्रो. प्रतीक सिंह, प्रो. साधना झा, डा. प्रमथ नाथ मिश्र, प्रेम कपूर, कृष्णानंद भारती, संजय सिंह, मनीषा यादव, सुशील कांति आदि मौजूद थे।

01 अप्रैल 2013 स्थान-कोलकाता केंद्र का सभा कक्ष

पाठक ही साहित्यकार का आईनाः काशीनाथ सिंह

कोलकाता, 2 अप्रैल। हिंदी के सुपरिचित साहित्यकार काशीनाथ सिंह ने कहा है कि पाठक ही किसी लेखक का आईना होता है। डा. सिंह महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र में आयोजित संवाद कार्यक्रम में बोल रहे थे।

उन्होंने कहा कि पाठक ही लेखक का कैरेक्टर सर्टिफिकेट देते हैं। उन्होंने कहा कि वे विश्वविद्यालय के बनाए लेखक नहीं हैं, अपितु पाठकों के बनाए लेखक हैं। महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र ने संवाद कार्यक्रम के पहले भारतीय भाषा परिषद के रचना समग्र पुरस्कार से सम्मानित होने के उपलक्ष्य में काशीनाथ सिंह की कृतियों पर कहासुनी कार्यक्रम रखा था जिसमें काशीनाथ के उपन्यास 'अपना मोर्चा' पर रवि प्रकाश, 'काशी का अस्सी' पर हरिराम पांडेय, 'रेहन पर रग्घू' पर केके श्रीवास्तव, 'महुआ चरित' पर महेंद्र कुशवाहा, 'घोआस' नाटक पर डा. कामेश्वर सिंह, 'घर का जोगी जोगड़ा' पर तारकेश्वर मिश्र ने आलेख पढ़े।

वक्ताओं ने कहा कि काशीनाथ सिंह ने विधाओं को तोड़ा है और हर विधा की आलोचना के लिए रचनात्मक चुनौती खड़ी की है। काशीनाथ जी की कृतियों पर बीज वक्तव्य दिया कोलकाता केंद्र के प्रभारी डा. कृपाशंकर चौबे ने। काशीनाथ सिंह की कृतियों पर आलेख पढे जाने के बाद लेखक से संवाद कार्यक्रम रखा गया जिसमें काशीनाथ सिंह ने कहा कि उन्हें विश्वविद्यालय ने लेखक नहीं बनाया, अपितु विश्वविद्यालय की चारदिवारी के बाहर की सड़कों, गांवों, बाजारों की भाषा व परिवेश ने बनाया। कार्यक्रम में काशीनाथ सिंह की कक्षा के छात्र रहे डा. प्रमथ नाथ मिश्र, समाजवादी चिंतक राजेंद्र राय, साहित्य के शोधार्थी प्रतीक सिंह तथा हावड़ा शिक्षा निकेतन के

कार्यक्रम में बाएं से डा. कामेश्वर सिंह, काशीनाथ सिंह तथा डा. कृपाशंकर चौबे।

समेत भारी संख्या में अध्यापक, शोधार्थी व साहित्य प्रेमी उपस्थित थे। कार्यक्रम की शुरुआत सुशील कांति के काव्य संगीत से हुई। कार्यक्रम का संचालन अभिजीत सिंह ने किया।

02 मई 2013 स्थान-कोलकाता केंद्र का सभा कक्ष

कविता आँख-मिचौली का खेलः राकेश श्रीमाल

कोलकाता, 2 मई। युवा साहित्यकार राकेश श्रीमाल ने कहा है कि कविता आँख-मिचौली के खेल की तरह है। अगर छू लिया तो पकड़ में आ जाती है लेकिन अधिकतर पकड़ में नहीं आती। श्रीमाल महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र में कविता की प्रकृति

पर आयोजित संगोष्ठी को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि आज सबसे अधिक महत्वपूर्ण है कि हम कविता के देखने को देख पाएं। कविता किस तरह से हमारे समाज, हमारे परिदृश्य और हमारी संस्कृति को देख पा रही है, इसे देखने की जरूरत है। जिस तरह घास का तिनका सूरज को देखता है, कविता उसी तरह पाठक को देखती है।

राकेश श्रीमाल ने कहा कि कविता से सच की उम्मीद नहीं करते हुए यथार्थ की उम्मीद करनी चाहिए क्योंकि यथार्थ सच और झूठ से हमेशा परे अपना स्वतंत्र अस्तित्व रखता है। कवि ब्रज मोहन ने कहा कि कविता बहुत अंतराल की अपेक्षा रखती है। केदारनाथ सिंह का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि उनके पहले और दूसरे कविता संग्रह में बीस वर्षों का अंतराल है। कवि जितेंद्र धीर ने कहा कि यह काव्य अराजक समय है और जीवन के वृहत्तर संदर्भों से जुड़ी रचनाओं का लगभग अकाल सा है।

संगोष्ठी को संबोधित करते राकेश श्रीमाल। उनके दाएं प्रो. विमलेश्वर द्विवेदी और डा. कृपाशंकर चौबे।

साहित्यकार सेराज खान बातिश ने कहा कि सारे धर्म ग्रंथ कविता में लिखे गए हैं लेकिन कविता उससे आगे की चीज है। वह मनिष्य को धर्म से भी ऊपर उठाती है।

कवि-कथाकार विमलेश त्रिपाठी ने कहा कि कविता के लिए पागल मन की जरूरत होती है। कवयित्री निर्मला तोदी ने कहा कि कविता अनायास ही स्वभाव संगी बन जाती है। उन्होंने खुद स्वाभाविक तौर पर कविताएं लिखनी शुरू कीं और उसी तरह छपने भी लगीं। कवि डा. प्रमथनाथ मिश्र ने कहा कि कविता पर आज पाश्चात्य प्रभाव दिखता है और छंद का भी अभाव दिखता है। लेखक-अनुवादक डा. सत्यप्रकाश तिवारी ने कहा कि आज कविता के सामने पठनीयता की समस्या है। रंगकर्मी जितेंद्र सिंह ने कहा कि वाचन या पाठ के बूते ही कविता किताब के पन्ने से निकलकर जबान तक आएगी। संगोष्ठी को राजेंद्र राय, श्रीनिवास यादव, सुशील कांति, अभिजीत सिंह, परमानंद सिंह ने भी संबोधित किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए वरिष्ठ साहित्यकार प्रो. विमलेश्वर द्विवेदी ने कहा कि आज की कविता के सामने सबसे बड़ी चुनौती बौद्धिकता तथा संवेदना की दूरी को पाटना है। बीज भाषण देते हुए विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र के प्रभारी डा. कृपाशंकर चौबे ने कहा कि हिंदी कविता के सामने सबसे बड़ा सवाल यह है कि उसमें वैसी भाषिक निरंतरता नहीं है जैसी उर्दू, मराठी, कन्नड़ या उड़िया में है।